

# इब्राहिम की कहानी (7 का भाग 3): मूर्त तोड़ना

रेटिंग:  TOP20

विवरण:

श्रेणी: [लेख इस्लाम की मान्यताएं पैगंबरों की कहानियां](#)

द्वारा: Imam Mufti

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

फरि वह समय आया जब प्रचार के साथ-साथ शारीरिक क्रिया भी करनी पड़ी। इब्राहीम ने मूर्तपूजा के खिलाफ एक साहसिक और नरिणायक प्रहार की योजना बनाई। कुरआन में इसका वर्णन यहूदी-ईसाई परंपराओं में वर्णन की तुलना में थोड़ा अलग है, जैसा कि वे कहते हैं कि इब्राहिम ने अपने पिता की व्यक्तित्व मूर्तियों को नष्ट कर दिया था। [1] कुरआन बताता है कि उसने एक धार्मिक वेदी पर रखी अपने लोगों की मूर्तियों को नष्ट कर दिया। इब्राहीम ने मूर्तियों पर अपनी योजना का संकेत दिया था:

**"तथा ईश्वर की शपथ! मैं अवश्य चाल चलूंगा तुम्हारी मूर्तियों के साथ, इसके पश्चात् कतिम चले जाओ।" (कुरआन 21:57)**

यह एक धार्मिक त्योहार का समय था, शायद सनि को समर्पित, जिसके लिए वहां के लोगो ने शहर से दूर चले गए। इब्राहीम को उत्सव में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था, लेकिन उन्होंने जाने से मना कर दिया था,

**"और उसने सतारों पर एक नजर डाली। फरि कहा: 'देखो! मैं बीमार महसूस कर रहा हूँ!'"**

इसलिए जब उसके साथी उसे छोड़ कर चले गए, तो यह उसका अवसर बन गया। जैसे ही मंदिर सुनसान था, इब्राहीम वहां गया और सोने की परत वाली लकड़ी की मूर्तियों के पास पहुंचा, जिसमें याजकों द्वारा उनके सामने वसित भोजन छोड़ा गया था। इब्राहीम ने अविश्वास में उनका मजाक उड़ाया:

**"फरि वह उनके देवताओं की तरफ मुड़ा और कहा, 'क्या तुम नहीं खाओगे? तुम्हें क्या तकलीफ है जो तुम नहीं बोलते हो?'"**

ऐसा क्या था जिससे मनुष्य अपने ही बनाये देवताओं की पूजा करता था?

**"तब उसने अपने दाहनि हाथ से प्रहार किया और तोड़ना शुरू कर दिया।"**

कुरआन हमें बताता है:

**"उसने उन के प्रधान को छोड़ सब को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।"**

मंदिर के पुजारी जब लौटे तो मंदिर की बर्बादी और तोड़फोड़ को देखकर हैरान रह गए। वे सोच रहे थे कि उनकी मूर्तियों के साथ ऐसा कौन कर सकता है। तभी किसी ने इब्राहीम के नाम लिया, यह समझाते हुए कि वह उनके बारे में बुरा बोलता था। जब उन्होंने उसे अपने सामने बुलाया, तब तो इब्राहीम ने उन्हें उनकी मूर्खता बताई:

**"उसने कहा: 'तुम उसकी पूजा करते हो जैसे तुम खुद बनाते हो जब ईश्वर ने तुम्हें बनाया है और जो तुम क्या बनाते हो?'"**

उनका गुस्सा बढ़ रहा था; वह उसका उपदेश नहीं सुनना चाहते थे, वे सीधे मुद्दे पर पहुंचे:

**"ऐ इब्राहीम, क्या तुमने ही हमारे देवताओं के साथ ऐसा किया है?"**

लेकिन इब्राहीम ने सबसे बड़ी मूर्तियों को एक वजह से छोड़ दिया था:

**"उसने कहा: 'लेकिन यह, उनके प्रमुख ने किया है। तो उनसे सवाल करो, यदि वे बोल सकते हैं!'"**

जब इब्राहीम ने उन्हें ऐसी चुनौती दी, तो वे असमंजस में पड़ गए। उन्होंने एक-दूसरे पर मूर्तियों की रखवाली ना करने का आरोप लगाया और उसकी आंखों में न देखते हुए कहा:

**"वास्तव में आप अच्छी तरह से जानते हैं कि ये नहीं बोलते हैं!"**

इसलिए इब्राहीम ने अपनी बात पर जोर दिया।

**"उसने कहा: 'तो उसके बजाय अपनी पूजा करो, जो आपको कुछ भी लाभ नहीं दे सकता है, ना ही आपको नुकसान पहुंचा सकता है? तो हमला करो उस पर और उन सभी पर जसिकी तुम ईश्वर के सवि पूजा करते हो! क्या तुमको कोई समझ नहीं है?'"**

आरोप लगाने वाले खुद आरोपी बन गए थे। उन पर तार्किक असंगतिका आरोप लगाया गया था, और इसलिए उनके पास इब्राहिम का कोई जवाब नहीं था। क्योंकि इब्राहिम का तर्क अचूक था, उनकी प्रतिक्रिया क्रोध और रोष थी, और उन्होंने इब्राहिम को जदि जलाने का दंड दिया,

**"उसके लिए एक भवन बनाओ और उसे भीषण आग में झोंक दो।"**

शहरवासियों ने आग के लिए लकड़ी इकट्ठा करने में मदद की, जब तक कयिह बहुत बड़ी आग न बन गई। युवा इब्राहिम ने दुनिया के ईश्वर द्वारा उसके लिए चुने गए भाग्य के प्रतिसमर्पण कर दिया। उसने विश्वास नहीं खोया, बल्किपरीक्षण ने उसे मजबूत बना दिया। इब्राहिम इस कोमल उम्र में भी आग की लपटों के सामने नहीं झुका; बल्कि इसमें प्रवेश करने से पहले उनके अंतमि शब्द थे,

**"ईश्वर मेरे लिए पर्याप्त है और वह मामलों का सबसे अच्छा नपिटानकर्ता है।" (सहीह अल बुखारी)**

यहां एक बार फिर इब्राहिम का एक उदाहरण है जो उन परीक्षाओं के लिए सही साबति हुआ जनिका उन्होंने सामना किया। सच्चे ईश्वर में उनके विश्वास का परीक्षण यहां किया गया था, और उन्होंने यह साबति कर दिया कयिह अपने अस्तित्व को ईश्वर की पुकार के सामने समर्पति करने के लिए तैयार थे। उनके इस विश्वास का प्रमाण उनके कार्यों से मलिता है।

ईश्वर ने यह नहीं चाहा था कयिह इब्राहिम का भाग्य हो, क्योंकि उसके आगे एक महान लक्ष्य था। उन्हें मानवता के लिए जाने वाले कुछ महानतम पैगंबरो का पति बनना था। ईश्वर ने इब्राहिम को उसके और उसके लोगों के लिए एक नशानी के रूप में बचाया।

**"हमने (ईश्वर) कहा: हे अग्न! तू शीतल तथा शान्तबिन जा, इब्राहिम पर। और उन्होंने उसके साथ बुराई चाही, तो हमने उन्हीं को क्षतगिरस्त कर दिया।"**

इस प्रकार इब्राहिम सही सलामत आग से बच निकले। लोगो ने अपने देवताओं के लिए उनसे बदला लेने की कोशशि की, लेकिन अंत में वे और उनकी मूर्तियाँ अपमानति हुईं।

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/291>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।